



e-ISSN: 2319-8753 | p-ISSN: 2347-6710

# IJIRSET

International Journal of Innovative Research in  
**SCIENCE | ENGINEERING | TECHNOLOGY**

# INTERNATIONAL JOURNAL OF INNOVATIVE RESEARCH

IN SCIENCE | ENGINEERING | TECHNOLOGY

Volume 12, Issue 1, January 2023

**ISSN** INTERNATIONAL  
STANDARD  
SERIAL  
NUMBER  
INDIA

**Impact Factor: 8.118**

9940 572 462

6381 907 438

[ijirset@gmail.com](mailto:ijirset@gmail.com)

[www.ijirset.com](http://www.ijirset.com)



# जाम्भोजी के साहित्य की पर्यावरण संरक्षण में उपादेयता

डॉक्टर छाया रानी

असिस्टेंट प्रोफेसर, हिंदी विभाग,

दयानंद आर्य कन्या डिग्री कॉलेज, मुरादाबाद, उत्तर प्रदेश

Mail ID : [chayarani1969@gmail.com](mailto:chayarani1969@gmail.com)

## सारांश

भारत में संत परम्परा प्राचीन काल से विद्यमान रही है। भारत की इस पावन धरा पर अनेको संतो ने अपने चिंतन एवं दर्शन से न केवल भारत वर्ष अपितु सम्पूर्ण विश्व के कल्याण हेतु कामना की हैं। इन्हीं संतो में से एक संत जम्भेश्वर जी हैं। इनका जीवन दर्शन वैश्विक है। अहिंसा प्रकृति संरक्षण, पर्यावरण के संरक्षण एवं नशा मुक्ति आदि उनके दर्शन का मूल मंत्र था।<sup>1</sup> आज मानव एवं प्रकृति में तारतम्यता नहीं होने की वजह से ग्लोबल वार्मिंग, अनियंत्रित प्राकृतिक आपदाएं घटित हो रही हैं। ऐसे समय में गुरु जम्भेश्वरजी की शिक्षा निःसन्देह इस दिशा में मार्गदर्शन का कार्य करती हैं। हमारे प्राचीन ग्रन्थों में भी कहा गया है कि प्रकृति मानव का पोषण करती है परन्तु वर्तमान मनुष्य प्रकृति के दोहन में लगा हुआ है। जीव हिंसा से प्रकृति एवं मानव के बीच का संतुलन बिगड़ गया है और इसकी वजह से आज मानव जीवन कोविड-19 जैसी भयंकर आपदा के खतरे में पड़ चुका है। ऐसे समय में गुरु जाम्भोजी का दर्शन अत्यन्त महत्वपूर्ण बन जाता है।

## प्रस्तावना

संत जाम्भोजी का चिंतन एवं इनके वर्तमान समय में उपयोगिता एक सम सामयिक विषय है।<sup>2</sup> प्रकृति पर्यावरण पशु संरक्षण पर जितना महत्व मध्यकालीन संतो में गुरु जाम्भोजी ने दिया उतना शायद अन्य संत नहीं दे पाये यह बात सर्वविदित है। गुरु जाम्भोजी ने अपने "सबदवाणी"<sup>4</sup> में मनुष्य को इस बात के लिए सदैव प्रेरित किया कि वह जीवन को सादगी एवं प्रकृति प्रिय बनाये रखे। जीवन के निर्माण एवं पोषण में प्रकृति की बेहद अहम भूमिका होती है।

बदले में जीव यदि इसका दोहन या शोषण ही करता रहेगा तो सम्भवतः एक समय प्रकृति भी पोषण को छोड़ देगी। आज जिस प्रकार कोविड-19 जैसी आपदा विश्व में फैल रही है उसका अवलोकन करें तो पायेंगे कि कहीं ना कहीं मानव एवं प्रकृति के बीच तारतम्यता में कमी के कारण सब हो रहा है। मनुष्य ने प्रकृति विरुद्ध आचरण कर अपने भौतिक सुखों में तो इजाफा कर लिया परन्तु उसका शारीरिक जीवन दरबदर कमजोर हो गया। वर्तमान समय में छोटे-छोटे बच्चों में कैंसर, मधुमेह, हृदय संबंधी रोग इस बात का स्पष्ट प्रमाण है कि मानव ने प्रकृति संरक्षण व पूजा को त्याग दिया और इसका परिणाम आने वाली पीढ़िया भुगत रही है।

हमारे पूर्वज कहते थे “पहला सुख निरोगी काया” मनुष्य स्वस्थ है तो वह सबसे बड़ा सुखी है परन्तु अब लोगों की मानसिकता में सुख की परिभाषा बदल गयी है। भारत में सनातन काल से ही पर्यावरण के साथ मित्रता का भाव रहा है पीपल, नीम, तुलसी, नदी, सूर्य आदि सभी को देवता मानकर इनकी पूजा का विधान हमारे प्राचीन ग्रन्थों में दे रखा है।<sup>5</sup> गुरु जाम्भोजी ने पर्यावरण को इसी व्यापक अर्थ में ग्रहण किया था। उनके जीवन का सार भी इसी बात के लिए था कि मनुष्य हिंसा पशुवध नशा एवं प्रकृति के अति दोहन से बचे ताकि वह इनके कुप्रभावों से बच सके।

## साहित्यावलोकन

यद्यपि संत जाम्भोजी के विचारों पर पूर्व में भी प्रकाश डालने का कार्य किया गया है परन्तु उनके विचार इतने व्यापक व वैश्विक हैं कि समय की मांग के अनुसार उन्हें और विस्तारपूर्वक बताया जा सकता है संत जाम्भोजी ने अपने जीवन में प्रकृति का सम्पूर्ण आनन्द लिया और मानव जाति को भी प्रेरित किया। अपने उन्नतीस नियमों में उन्होंने मानव एवं पर्यावरण के बीच मित्रता सम्बन्ध रखने की सीख दी। उनका यह कथन “पहले अपने पुत्र पौत्र को मारो सौ पीढ़ो जाय रुंख जीव संधारो”<sup>6</sup> इस बात का सूचक है कि वो प्रकृति, जीव पर्यावरण के प्रति सद्भाव रखते हैं इसके बारे में हमें निम्न कथनों से भी जानकारी प्राप्त होती है—

1. जीव दया नित् राख पाप नहीं कीजिए।

2. जांटी हिरण, संहार देख सिर दीजिए ।
3. बघिया करे बैल हो तो देख छुडाइये ।
4. बरजत मारे जीव तांह मर जाइये ।
6. जीवा भरे जैहि काम कदै न कराईये ।
6. जीवा ऊपरि जोरकरीजे अन्तिकाल हुरासी ।
- 7 रे । बिन ही गुन्हें जीव क्यू मारो ।<sup>7</sup>

इन सब अमृतवाणी में प्रकृति, जीव पर्यावरण कीसंवृद्धि एवं संरक्षण की सीख दी गयी है ।

जाम्भोजी ने आज से पांच सौ वर्ष पहले ही मनुष्य को पर्यावरण के संरक्षण का महत्व बता दिया था ।<sup>8</sup> इस संसार में सभी प्राणियों को अपने-अपने शरीर से एक जैसा लगाव होता है । ऐसे में मनुष्य अपने शरीर के पोषण हेतु दूसरे प्राणियों का वध करता है तो यह अत्यन्त बुरा कार्य है । जाम्भोजी ने अपनी 'सबदवाणी' में केवल मात्र दया, क्षमा, प्रकृति से अनुराग, पर्यावरण एवं चित्त की शुद्धता आदि का ही जिक्र किया है । उनका चिंतन साख्य दर्शन, योग दर्शन आदि की भांति गूढ़ एवं गुप्त न होकर बिल्कुल सरल एवं सादा है । गुरु जान्मो जी ने उस समय विज्ञान का वह ज्ञान प्राप्त कर लिया जिसका आज के आधुनिक युग में बेहद महत्वपूर्ण स्थान है ।

गुरु जागो जी का चिंतन नित्य प्रतिदिन की जीवन से बंधा था । मनुष्य किस प्रकार अपना आहार-विहार करे कैसे वह प्रकृति की सुरक्षा करें, जीव हिंसा से किस प्रकार अपने को विलग करे आदि नित्य जीवन में काम आने वाली सुक्ष्म परन्तु गंभीर विषयों की शिक्षा गुरु जाम्भोजी ने अपने "सबदवाणी" में की थी । उनका भविष्य दृश्य ज्ञान-बोध, पर्यावरण प्रदूषण एवं प्रकृति की विपदा के लिए संचेष्ट था ।

प्रकृति के तीन प्रमुख घटक हैं मानव, वनस्पति मानवेत्तर प्राणी । इनमें मानव अपनी रक्षा करने में स्वयं समर्थवान है और शेष दोनों की रक्षा भी मानव पर निर्भर है । मानव का हित दोनों को

सुरक्षित करने में हैं। इसी से प्रकृति के विभिन्न आयामों में सन्तुलन रह सकता है एवं पर्यावरण भी शुद्ध रह सकता है। जाम्भोजी की मान्यता थी कि जीव-जन्तु प्रकृति प्रदत्त उपादान, प्राकृतिक सौन्दर्य है और ये उपादान मानव जीवन का सौरभ है। प्रकृति परिधान हमारा वैभव है, प्रकृति जीवन है, जीवन औषधि है प्राणवायु है, मानव मात्र का आर्थिक स्रोत है।

जाम्भोजी का जीवन बुद्धिजीवियों और पर्यावरण वैज्ञानिकों के लिए अमृतमय अनुकरणीय दिग्दर्शन है। यदि उन्हें व्यावहारिक जीवन में आत्मसात कर सके तो जाम्भोजी का जीवन वैज्ञानिकों, पर्यावरण वैज्ञानिकों एवं प्रबुद्ध नागरिकों के लिए अमर संदेश है।

पर्यावरणीय क्षरण वर्तमान की एक चुनौतिपूर्ण एवं वैश्विक समस्या बन गई है एवं सम्पूर्ण विश्व पर्यावरण संरक्षण के उपाय सोचने पर मजबूर है। ऐसे समय में जाम्भोजी का चिंतन एवं उनके द्वारा प्रतिपादित नियम जो आज से कई सौ वर्षों पूर्व मानव जाति को सम्बोधित किये थे ये आधुनिक, आर्थिक एवं औद्योगिक युग में अत्यधिक प्रासंगिक हो रहे हैं। गुरु जाम्भोजी ने सांस्कृतिक, धार्मिक, सामाजिक एवं मानवतावादी उपदेश तो दिये ही हैं वैश्विक परिवेश में पर्यावरण संरक्षण के मूल मंत्र भी उनकी सबदवाणी में निहित थे उनका धर्म को पर्यावरण संरक्षण के साथ जोड़ने की सोच उल्लेखनीय एवं अद्वितीय है। उनके विचार केवल समाज सुधार हेतु ही नहीं बल्कि युगान्तरकारी एवं क्रान्तिकारी भी हैं। आज धरती पर वनों का विनाश किया जा रहा है, जिसका दुष्परिणाम बढ़ता पर्यावरण प्रदूषण सर्वविदित है।

गुरु जाम्भोजी ने अपने उपदेश में कहा कि “जीव दया पालणी रुंख लीलो नहीं घावे”<sup>9</sup> अर्थात् जीवों पर दया करना और वृक्षों को नहीं काटना प्रकृति में पर्यावरण संतुलन को बनाये रखने के लिये जैविक घटको (प्राणी एवं वनस्पति) का अहम महत्व है। जब भी मनुष्य प्रगति एवं विकास के नाम पर जीवों व जंगलों का अतिशोषण करता है, इसके परिणाम विनाशकारी होते हैं। अगर हमें विश्व की वन संस्कृति का संरक्षण करना है तो जाम्भोजी के सिद्धांतों को अपनाना होगा। वन्य प्राणी एवं वनस्पति का पारस्परिक सम्बंध अटूट खाद्य श्रृंखला के रूप में सर्वविदित है क्योंकि कोई भी जीव परोक्ष एवं अपरोक्ष रूप से वनस्पति द्वारा जीवित है। जलवायु की शुद्धता हेतु जाम्भोजी ने अपनी “सबदवाणी” द्वारा नित्य हवन करने का उपदेश दिया। मनुष्य अपनी



मूलभूत आवश्यकताओं के लिए प्रकृति पर निर्भर है। जाम्भोजी ने “सबदवाणी” में जीव रक्षा, पर्यावरण रक्षा को प्रमुख सिद्धांत मानकर पर्यावरण की प्रबंधकीय व्यवस्था का विवरण अपनी स्वानुभूतियों के माध्यम से प्रकट किया।

## अध्ययन का उद्देश्य

इस शोध कार्य का प्रमुख उद्देश्य यह है कि इस से हम मानव जाति को इस बात का पुनः स्मरण कराएँ कि मानव एवं प्रकृति यदि समन्वय से एक दूसरे के जीवन यापन में सहायता करें तो आज कई प्राकृतिक एवं कृत्रिम आपदाओं से न केवल बचा जा सकता है अपितु आने वाले भविष्य को भी सुरक्षित किया जा सकता है। गुरु जाम्भोजी ने अपने जीवन काल में भिन्न-भिन्न जगहों का भ्रमण किया और अपने अनुभवों से लोगों को इस बात की सीख दी कि मानव जीवन एवं पेड़ पौधे और पशु आदि परोक्ष रूप से एक दूसरे के सहायक हैं अतः मानव को चाहिये कि इन सब का संरक्षण, संवर्धन करें ताकि वह अपना भी भला कर सके।<sup>2</sup> संत जाम्भोजी का सारा जीवन पेड़-पौधे जीव-जन्तु पर्यावरण आदि के महत्वपूर्ण योगदान को मानव जाति को बताने में ही व्यतीत हुआ। प्रकृति के अद्भुत योगदान को जाम्भोजी ने महसूस कर मानव जाति को इसके उपयोग एवं दुरुपयोग के बारे में समझाया पशु हिंसा से होने वाले खतरों से अवगत कराया। आज जिस प्रकार मनुष्य प्रकृति के अनवरत शोषण में लग कर अपना ही सर्वनाश कर रहा है उसे समझाने हेतु गुरु जाम्भोजी के चिंतन का अध्ययन एवं मनन करना बेहद आवश्यक हो गया है।

## निष्कर्ष

गुरु जाम्भोजी का एवं वर्तमान समय में उनकी उपयोगिता आज के संदर्भ में अति महत्वपूर्ण विचार हैं। प्रकृति पर्यावरण, वायुमण्डल की प्रदूषण दिन प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है और पूरा विश्व इस समस्या को सुलझाने के निरन्तर प्रयास में लगा है परन्तु आश्चर्य की बात यह है कि जब ये सारी समस्याएं विद्यमान भी नहीं थी तब हमारे संत गुरु जाम्भोजी ने अपनी दिव्य दृष्टि द्वारा इन समस्याओं को भांपकर उस समय इसका उपाय भी बताया परन्तु अज्ञानी मानव उनके उपदेशों को समझ नहीं पाया।<sup>10</sup> जीव एवं वनस्पति एक दूसरे से कितने घनिष्ठ रूप से जुड़े हुए



है इस गुढ़ रहस्य को जाम्भोजी ने बड़े सरल भाषा में जनमानस को बताया और साथ ही सीख भी दी कि दोनों का भविष्य एक दूसरे के संरक्षण पर टिका है। अगर मानव जाति ने पर्यावरण, वनस्पति जीव आदि के साथ मित्रवत व्यवहार न किया तो सगयत इस पृथ्वी से मानव जाति का द्वारा हो जायेगा जो हम वर्तमान में कोविड- 19 जैसी बीमारी के रूप में देख रहे हैं जिसके कारण चीन, ब्रिटेन, फ्रांस, इटली और अमेरिका जैसी महाशक्तियों समेत समस्त विश्व में लाखों लोग मर गये। इस सबके लिए मानव जाति स्वयं जिम्मेदार है। अतः हमें वनस्पति जगत के प्राकृतिक नियमों का पालन आदर सहित करना चाहिये। यही सीख गुरु जाम्भोजी ने अपने उपदेशों में दी थी।

### संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. वर्तमान परिदृश्य में गुरु जाम्भोजी का चिंतन जांभाणी साहित्य प्रकाशन पृ. 122
2. वहीं पृ. 142
3. वही पृ. 1
4. वही पृ. 124
5. वही पृ. 133
6. गुरु जाम्भोजी का वैश्विक चिंतन- डॉ. सुरेन्द्र बिश्नोई, राजकुमार सेवक प्रकाशक जांभाणी साहित्य बीकानेर पृ. 99
7. वही पृ. 101
8. गुरु जाम्भोजी का वैश्विक चिंतन, पृ. 110
9. जांभाणी साहित्य : विविध आयाम डॉ. कृष्णलाल बिश्नोई, डॉ बनवारी लाल साहू, डॉ. सुरेन्द्र कुमार बिश्नोई, प्रकाशक श्री गुरु जाम्भेश्वर महाराज चौरिटेबल ट्रस्ट, बीकानेर पृ. 198
10. गुरु जाम्भोजी का वैश्विक चिंतन, पृ. 195



**INNO SPACE**  
SJIF Scientific Journal Impact Factor  
**Impact Factor: 8.118**



**ISSN** INTERNATIONAL  
STANDARD  
SERIAL  
NUMBER  
INDIA



# INTERNATIONAL JOURNAL OF INNOVATIVE RESEARCH

IN SCIENCE | ENGINEERING | TECHNOLOGY

 **9940 572 462**  **6381 907 438**  **ijirset@gmail.com**



[www.ijirset.com](http://www.ijirset.com)

Scan to save the contact details